

## ‘मन की बात’ (15वीं कड़ी)

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | आमतौर पर ये समय उत्सव का होता है, जगह-जगह मेले लगते हैं, धार्मिक पूजा-पाठ होते हैं | कोरोना के इस संकट काल में लोगों में उमंग तो है, उत्साह भी है, लेकिन, हम सबको मन को छू जाए, वैसा अनुशासन भी है | बहुत एक रूप में देखा जाए तो नागरिकों में दायित्व का एहसास भी है | लोग अपना ध्यान रखते हुए, दूसरों का ध्यान रखते हुए, अपने रोजमर्रा के काम भी कर रहे हैं | देश में हो रहे हर आयोजन में जिस तरह का संयम और सादगी इस बार देखी जा रही है, वो अभूतपूर्व है | गणेशोत्सव भी कहीं ऑनलाइन मनाया जा रहा है, तो, ज्यादातर जगहों पर इस बार इकोफ्रेंडली गणेश जी की प्रतिमा स्थापित की गई है | साथियो, हम, बहुत बारीकी से अगर देखेंगे, तो एक बात अवश्य हमारे ध्यान में आयेगी - हमारे पर्व और पर्यावरण | इन दोनों के बीच एक बहुत गहरा नाता रहा है | जहां एक ओर हमारे पर्वों में पर्यावरण और प्रकृति के साथ सहजीवन का सन्देश छिपा होता है तो दूसरी ओर कई सारे पर्व प्रकृति की रक्षा के लिये ही मनाए जाते हैं | जैसे, बिहार के पश्चिमी चंपारण में, सदियों से थारु आदिवासी समाज के लोग 60 घंटे के lockdown या उनके ही शब्दों में कहें तो '60 घंटे के बरना' का पालन करते हैं | प्रकृति की रक्षा के लिये बरना को थारु समाज ने अपनी परंपरा का हिस्सा बना लिया है और सदियों से बनाया है | इस दौरान न कोई गाँव में आता है, न ही कोई अपने घरों से बाहर निकलता है और लोग मानते हैं कि अगर वो बाहर निकले या कोई बाहर से आया, तो उनके आने-जाने से, लोगों की रोजमर्रा की गतिविधियों से, नए पेड़-पौधों को नुकसान हो सकता है | बरना की शुरुआत में भव्य तरीके से हमारे आदिवासी भाई-बहन पूजा-पाठ करते हैं और उसकी समाप्ति पर आदिवासी परम्परा के गीत,संगीत, नृत्य जमकर के उसके कार्यक्रम भी होते हैं |

साथियो, इन दिनों ओणम का पर्व भी धूम-धाम से मनाया जा रहा है | ये पर्व चिनगम महीने में आता है | इस दौरान लोग कुछ नया खरीदते हैं, अपने घरों को सजाते हैं, पूक्कलम बनाते हैं, ओनम-सादिया का आनंद लेते हैं, तरह-तरह के खेल और प्रतियोगिताएं भी होती हैं | ओणम की धूम तो, आज, दूर-सुदूर विदेशों तक पहुँची हुई है | अमेरिका हो, यूरोप हो, या खाड़ी देश हों, ओणम का उल्लास आपको हर कहीं मिल जाएगा | ओणम एक International Festival बनता जा रहा है |

साथियो, ओणम हमारी कृषि से जुड़ा हुआ पर्व है | ये हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए भी एक नई शुरुआत का समय होता है | किसानों की शक्ति से ही तो हमारा जीवन, हमारा समाज चलता है | हमारे पर्व किसानों के परिश्रम से ही रंग-बिरंगे बनते हैं | हमारे अन्नदाता को, किसानों की जीवनदायिनी शक्ति को तो वेदों में भी बहुत गौरवपूर्ण रूप से नमन किया गया है |

ऋग्वेद में मन्त्र है -

अन्नानां पतये नमः, क्षेत्राणाम पतये नमः |

अर्थात्, अन्नदाता को नमन है, किसान को नमन है | हमारे किसानों ने कोरोना की इस कठिन परिस्थितियों में भी अपनी ताकत को साबित किया है | हमारे देश में इस बार खरीफ की फसल की बुआई पिछले साल के मुकाबले 7 प्रतिशत ज्यादा हुई है | धान की रुपाई इस बार लगभग 10 प्रतिशत, दालें लगभग 5 प्रतिशत, मोटे अनाज- **Coarse Cereals** लगभग 3 प्रतिशत, **Oilseeds** लगभग 13 प्रतिशत, कपास लगभग 3 प्रतिशत ज्यादा बोई गई है | मैं, इसके लिए देश के किसानों को बधाई देता हूँ, उनके परिश्रम को नमन करता हूँ |

मेरे प्यारे देशवासियो, कोरोना के इस कालखंड में देश कई मोर्चों पर एक साथ लड़ रहा है, लेकिन इसके साथ-साथ, कई बार मन में ये भी सवाल आता रहा कि इतने लम्बे समय तक घरों में रहने के कारण, मेरे छोटे-छोटे बाल-मित्रों का समय कैसे बीतता होगा | और इसी से मैंने गांधीनगर की **Children University** जो दुनिया में एक अलग तरह का प्रयोग है, भारत सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, सूक्ष्म-लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय, इन सभी के साथ मिलकर, हम बच्चों के लिये क्या कर सकते हैं, इस पर मंथन किया, चिंतन किया | मेरे लिए ये बहुत सुखद था, लाभकारी भी था क्योंकि एक प्रकार से ये मेरे लिए भी कुछ नया जानने का, नया सीखने का अवसर बन गया |

साथियो, हमारे चिंतन का विषय था- खिलौने और विशेषकर भारतीय खिलौने | हमने इस बात पर मंथन किया कि भारत के बच्चों को नए-नए **Toys** कैसे मिलें, भारत, **Toy Production** का बहुत बड़ा **hub** कैसे बने | वैसे मैं 'मन की बात' सुन रहे बच्चों के माता-पिता से क्षमा माँगता हूँ, क्योंकि हो सकता है, उन्हें, अब, ये 'मन की बात' सुनने के बाद खिलौनों की नयी-नयी **demand** सुनने का शायद एक नया काम सामने आ जाएगा |

साथियो, खिलौने जहां activity को बढ़ाने वाले होते हैं, तो खिलौने हमारी आकांक्षाओं को भी उड़ान देते हैं। खिलौने केवल मन ही नहीं बहलाते, खिलौने मन बनाते भी हैं और मकसद गढ़ते भी हैं। मैंने कहीं पढ़ा, कि, खिलौनों के सम्बन्ध में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि **best Toy** वो होता है जो **Incomplete** हो। ऐसा खिलौना, जो अधूरा हो, और, बच्चे मिलकर खेल-खेल में उसे पूरा करें। गुरुदेव टैगोर ने कहा था कि जब वो छोटे थे तो खुद की कल्पना से, घर में मिलने वाले सामानों से ही, अपने दोस्तों के साथ, अपने खिलौने और खेल बनाया करते थे। लेकिन, एक दिन बचपन के उन मौज-मस्ती भरे पलों में बड़ों का दखल हो गया। हुआ ये था कि उनका एक साथी, एक बड़ा और सुंदर सा, विदेशी खिलौना लेकर आ गया। खिलौने को लेकर इतराते हुए अब सब साथी का ध्यान खेल से ज्यादा खिलौने पर रह गया। हर किसी के आकर्षण का केंद्र खेल नहीं रहा, खिलौना बन गया। जो बच्चा कल तक सबके साथ खेलता था, सबके साथ रहता था, घुलमिल जाता था, खेल में डूब जाता था, वो अब दूर रहने लगा। एक तरह से बाकी बच्चों से भेद का भाव उसके मन में बैठ गया। महंगे खिलौने में बनाने के लिये भी कुछ नहीं था, सीखने के लिये भी कुछ नहीं था। यानी कि, एक आकर्षक खिलौने ने एक उत्कृष्ट बच्चे को कहीं दबा दिया, छिपा दिया, मुरझा दिया। इस खिलौने ने धन का, सम्पत्ति का, जरा बड़प्पन का प्रदर्शन कर लिया लेकिन उस बच्चे की **Creative Sprit** को बढ़ने और संवरने से रोक दिया। खिलौना तो आ गया, पर खेल खत्म हो गया और बच्चे का खिलना भी खो गया। इसलिए, गुरुदेव कहते थे, कि, खिलौने ऐसे होने चाहिए जो बच्चे के बचपन को बाहर लाये, उसकी **creativity** को सामने लाए। बच्चों के जीवन के अलग-अलग पहलू पर खिलौनों का जो प्रभाव है, इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बहुत ध्यान दिया गया है। खेल-खेल में सीखना, खिलौने बनाना सीखना, खिलौने जहां बनते हैं वहाँ की **visit** करना, इन सबको **curriculum** का हिस्सा बनाया गया है।

साथियो, हमारे देश में **Local** खिलौनों की बहुत समृद्ध परंपरा रही है। कई प्रतिभाशाली और कुशल कारीगर हैं, जो अच्छे खिलौने बनाने में महारत रखते हैं। भारत के कुछ क्षेत्र **Toy Clusters** यानी खिलौनों के केन्द्र के रूप में भी विकसित हो रहे हैं। जैसे, कर्नाटक के रामनगरम में चन्नापटना, आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा में कोंडापल्ली, तमिलनाडु में तंजौर, असम में धुबरी, उत्तर प्रदेश का वाराणसी - कई ऐसे स्थान हैं, कई नाम गिना सकते हैं। आपको ये जानकार आश्चर्य होगा कि

**Global Toy Industry, 7 लाख करोड़ रुपये से भी अधिक की है | 7 लाख करोड़ रुपयों का इतना बड़ा कारोबार, लेकिन, भारत का हिस्सा उसमें बहुत कम है | अब आप सोचिए कि जिस राष्ट्र के पास इतनी विरासत हो, परम्परा हो, विविधता हो, युवा आबादी हो, क्या खिलौनों के बाजार में उसकी हिस्सेदारी इतनी कम होनी, हमें, अच्छा लगेगा क्या? जी नहीं, ये सुनने के बाद आपको भी अच्छा नहीं लगेगा | देखिये साथियो, Toy Industry बहुत व्यापक है | गृह उद्योग हो, छोटे और लघु उद्योग हो, MSMEs हों, इसके साथ-साथ बड़े उद्योग और निजी उद्यमी भी इसके दायरे में आते हैं | इसे आगे बढ़ाने के लिए देश को मिलकर मेहनत करनी होगी | अब जैसे आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में श्रीमान सी.वी. राजू हैं | उनके गाँव के एति-कोप्पका Toys एक समय में बहुत प्रचलित थे | इनकी खासियत ये थी कि ये खिलौने लकड़ी से बनते थे, और दूसरी बात ये कि इन खिलौनों में आपको कहीं कोई angle या कोण नहीं मिलता था | ये खिलौने हर तरफ से round होते थे, इसलिए, बच्चों को चोट की भी गुंजाइश नहीं होती थी | सी.वी. राजू ने एति-कोप्पका toys के लिये, अब, अपने गाँव के कारीगरों के साथ मिलकर एक तरह से नया movement शुरू कर दिया है | बेहतरीन quality के एति-कोप्पका Toys बनाकर सी.वी. राजू ने स्थानीय खिलौनों की खोई हुई गरिमा को वापस ला दिया है | खिलौनों के साथ हम दो चीजें कर सकते हैं – अपने गौरवशाली अतीत को अपने जीवन में फिर से उतार सकते हैं और अपने स्वर्णिम भविष्य को भी सँवार सकते हैं | मैं अपने start-up मित्रों को, हमारे नए उद्यमियों से कहता हूँ - Team up for toys... आइए मिलकर खिलौने बनाएं | अब सभी के लिये Local खिलौनों के लिये Vocal होने का समय है | आइए, हम अपने युवाओं के लिये कुछ नए प्रकार के, अच्छी quality वाले, खिलौने बनाते हैं | खिलौना वो हो जिसकी मौजूदगी में बचपन खिले भी, खिलखिलाए भी | हम ऐसे खिलौने बनाएं, जो पर्यावरण के भी अनुकूल हों |**

साथियो, इसी तरह, अब कंप्यूटर और स्मार्टफोन के इस जमाने में कंप्यूटर गेम्स का भी बहुत trend है | ये गेम्स बच्चे भी खेलते हैं, बड़े भी खेलते हैं | लेकिन, इनमें भी जितने गेम्स होते हैं, उनकी themes भी अधिकतर बाहर की ही होती हैं | हमारे देश में इतने ideas हैं, इतने concepts हैं, बहुत समृद्ध हमारा इतिहास रहा है | क्या हम उन पर games बना सकते हैं ? मैं देश के युवा talent से कहता हूँ,

आप, भारत में भी games बनाइये, और, भारत के भी games बनाइये | कहा भी जाता है - **Let the games begin !** तो चलो, खेल शुरू करते हैं !

साथियो, आत्मनिर्भर भारत अभियान में **Virtual Games** हों, **Toys** का **Sector** हो, सबने, बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है और ये अवसर भी है | जब आज से सौ वर्ष पहले, असहयोग आंदोलन शुरू हुआ, तो गांधी जी ने लिखा था कि – “असहयोग आन्दोलन, देशवासियों में आत्मसम्मान और अपनी शक्ति का बोध कराने का एक प्रयास है।”

आज, जब हम देश को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रहे हैं, तो, हमें, पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना है, हर क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाना है | असहयोग आंदोलन के रूप में जो बीज बोया गया था,उसे, अब, आत्मनिर्भर भारत के वट वृक्ष में परिवर्तित करना हम सब का दायित्व है |

मेरे प्यारे देशवासियो, भारतीयों के **innovation** और **solution** देने की क्षमता का लोहा हर कोई मानता है और जब समर्पण भाव हो, संवेदना हो तो ये शक्ति असीम बन जाती है | इस महीने की शुरुआत में, देश के युवाओं के सामने, एक **app innovation challenge** रखा गया | इस आत्मनिर्भर भारत **app innovation challenge** में हमारे युवाओं ने बढ-चढकर के हिस्सा लिया | करीब, 7 हजार **entries** आई, उसमें भी, करीब-करीब दो तिहाई **apps tier two** और **tier three** शहरों के युवाओं ने बनाए हैं | ये आत्मनिर्भर भारत के लिए, देश के भविष्य के लिए, बहुत ही शुभ संकेत है | आत्मनिर्भर **app innovation challenge** के **results** देखकर आप ज़रूर प्रभावित होंगे | काफी जाँच-परख के बाद, अलग-अलग **category** में, लगभग दो दर्जन **Apps** को **award** भी दिए गये हैं | आप जरूर इन **Apps** के बारे में जाने और उनसे जुड़ें | हो सकता है आप भी ऐसा कुछ बनाने के लिए प्रेरित हो जायें | इनमें एक **App** है, कुटुकी **kids learning app**. ये छोटे बच्चों के लिए ऐसा **interactive app** है जिसमें गानों और कहानियों के जरिए बात-बात में ही बच्चे **math science** में बहुत कुछ सीख सकते हैं | इसमें **activities** भी हैं, खेल भी हैं | इसी तरह एक **micro blogging platform** का भी **app** है | इसका नाम है कू - **K O O कू** | इसमें, हम, अपनी मातृभाषा में **text, video** और **audio** के जरिए अपनी बात रख सकते हैं, **interact** कर सकते हैं | इसी तरह चिंगारी **App** भी युवाओं के बीच काफी **popular** हो रहा है | एक **app** है **Ask सरकार** | इसमें

chat boat के जरिए आप interact कर सकते हैं और किसी भी सरकारी योजना के बारे में सही जानकारी हासिल कर सकते हैं, वो भी text, audio और video तीनों तरीकों से | ये आपकी बड़ी मदद कर सकता है | एक और app है, step set go. ये fitness App है | आप कितना चले, कितनी calories burn की, ये सारा हिसाब ये app रखता है, और आपको fit रहने के लिये motivate भी करता है | मैंने ये कुछ ही उदाहरण दिये हैं | कई और apps ने भी इस challenge को जीता है | कई Business Apps हैं, games के App है, जैसे 'Is EqualTo', Books & Expense, Zoho (जोहो) Workplace, FTC Talent. आप इनके बारे में net पर search करिए, आपको बहुत जानकारी मिलेगी | आप भी आगे आएं, कुछ innovate करें, कुछ implement करें | आपके प्रयास, आज के छोटे-छोटे start-ups, कल बड़ी-बड़ी कंपनियों में बदलेंगे और दुनिया में भारत की पहचान बनेंगे | और आप ये मत भूलिये कि आज जो दुनिया में बहुत बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ नज़र आती हैं ना, ये भी, कभी, startup हुआ करती थी |

प्रिय देशवासियो, हमारे यहाँ के बच्चे, हमारे विद्यार्थी, अपनी पूरी क्षमता दिखा पाएं, अपना सामर्थ्य दिखा पाएं, इसमें बहुत बड़ी भूमिका Nutrition की भी होती है, पोषण की भी होती है | पूरे देश में सितम्बर महीने को पोषण माह - Nutrition Month के रूप में मनाया जाएगा | Nation और Nutrition का बहुत गहरा सम्बन्ध होता है | हमारे यहाँ एक कहावत है – “यथा अन्नम तथा मन्म” यानी, जैसा अन्न होता है, वैसा ही हमारा मानसिक और बौद्धिक विकास भी होता है | Experts कहते हैं कि शिशु को गर्भ में, और बचपन में, जितना अच्छा पोषण मिलता है, उतना अच्छा उसका मानसिक विकास होता है और वो स्वस्थ रहता है | बच्चों के पोषण के लिये भी उतना ही जरूरी है कि माँ को भी पूरा पोषण मिले और पोषण या Nutrition का मतलब केवल इतना ही नहीं होता कि आप क्या खा रहे हैं, कितना खा रहे हैं, कितनी बार खा रहे हैं | इसका मतलब है आपके शरीर को कितने जरूरी पोषक तत्व, nutrients मिल रहे हैं | आपको Iron, Calcium मिल रहे हैं या नहीं, Sodium मिल रहा है या नहीं, vitamins मिल रहे हैं या नहीं, ये सब Nutrition के बहुत Important aspects हैं | Nutrition के इस आन्दोलन में People Participation भी बहुत जरूरी है | जन-भागीदारी ही इसको सफल करती है | पिछले कुछ वर्षों में, इस दिशा में, देश में, काफी प्रयास किए गये हैं | खासकर

हमारे गाँवों में इसे जनभागीदारी से जन-आन्दोलन बनाया जा रहा है | पोषण सप्ताह हो, पोषण माह हो, इनके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा जागरूकता पैदा की जा रही है | स्कूलों को जोड़ा गया है | बच्चों के लिये प्रतियोगिताएं हों, उनमें Awareness बढ़े, इसके लिये भी लगातार प्रयास जारी हैं | जैसे Class में एक Class Monitor होता है, उसी तरह Nutrition Monitor भी हो, report card की तरह Nutrition Card भी बने, इस तरह की भी शुरुआत की जा रही है | पोषण माह – Nutrition Month के दौरान MyGov portal पर एक food and nutrition quiz भी आयोजित की जाएगी, और साथ ही एक मीम(meme) competition भी होगा | आप खुद participate करें और दूसरों को भी motivate करें |

साथियो अगर आपको गुजरात में सरदार वल्लभभाई पटेल के Statue of Unity जाने का अवसर मिला होगा, और कोविड के बाद जब वो खुलेगा और आपको जाने का अवसर मिलेगा, तो, वहां एक unique प्रकार का Nutrition Park बनाया गया है | खेल-खेल में ही Nutrition की शिक्षा आनंद-प्रमोद के साथ वहां जरूर देख सकते हैं |

साथियो, भारत एक विशाल देश है, खान-पान में ढेर सारी विविधता है | हमारे देश में छह अलग-अलग ऋतुयें होती हैं, अलग-अलग क्षेत्रों में वहाँ के मौसम के हिसाब से अलग-अलग चीजें पैदा होती हैं | इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हर क्षेत्र के मौसम, वहाँ के स्थानीय भोजन और वहाँ पैदा होने वाले अन्न, फल, सब्जियों के अनुसार एक पोषक, nutrient rich, diet plan बने | अब जैसे Millets – मोटे अनाज – रागी है, ज्वार है, ये बहुत उपयोगी पोषक आहार हैं | एक “भारतीय कृषि कोष” तैयार किया जा रहा है, इसमें हर एक जिले में क्या-क्या फसल होती है, उनकी nutrition value कितनी है, इसकी पूरी जानकारी होगी | ये आप सबके लिए बहुत बड़े काम का कोष हो सकता है | आइये, पोषण माह में पौष्टिक खाने और स्वस्थ रहने के लिए हम सभी को प्रेरित करें |

प्रिय देशवासियो, बीते दिनों, जब हम अपना स्वतंत्रता दिवस मना रहे थे, तब एक दिलचस्प खबर पर मेरा ध्यान गया | ये खबर है हमारे सुरक्षाबलों के दो जांबाज किरदारों की | एक है सोफी और दूसरी विदा | सोफी और विदा, Indian

Army के श्वान हैं, Dogs हैं और उन्हें Chief of Army Staff 'Commendation Cards' से सम्मानित किया गया है | सोफी और विदा को ये सम्मान इसलिए मिला, क्योंकि इन्होंने, अपने देश की रक्षा करते हुए, अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है | हमारी सेनाओं में, हमारे सुरक्षाबलों के पास, ऐसे, कितने ही बहादुर श्वान हैं Dogs हैं जो देश के लिये जीते हैं और देश के लिये अपना बलिदान भी देते हैं | कितने ही बम धमाकों को, कितनी ही आंतकी साजिशों को रोकने में ऐसे Dogs ने बहुत अहम् भूमिका निभाई है | कुछ समय पहले मुझे देश की सुरक्षा में dogs की भूमिका के बारे में बहुत विस्तार से जानने को मिला | कई किस्से भी सुने | एक dog बलराम ने 2006 में अमरनाथ यात्रा के रास्ते में, बड़ी मात्र में, गोला-बारूद खोज निकाला था | 2002 में dogs भावना ने IED खोजा था | IED निकालने के दौरान आंतकियों ने विस्फोट कर दिया, और श्वान शहीद हो गये | दो-तीन वर्ष पहले, छत्तीसगढ़ के बीजापुर में CRPF का sniffer dog 'Cracker' भी IED blast में शहीद हो गया था | कुछ दिन पहले ही आपने शायद TV पर एक बड़ा भावुक करने वाला दृश्य देखा होगा, जिसमें, बीड पुलिस अपने साथी Dog राँकी को पूरे सम्मान के साथ आखिरी विदाई दे रही थी | राँकी ने 300 से ज्यादा केसों को सुलझाने में पुलिस की मदद की थी | Dogs की Disaster Management और Rescue Missions में भी बहुत बड़ी भूमिका होती हैं | भारत में तो National Disaster Response Force – NDRF ने ऐसे दर्जनों Dogs को Specially Train किया है | कहीं भूकंप आने पर, ईमारत गिरने पर, मलबे में दबे जीवित लोगों को खोज निकालने में ये dogs बहुत expert होते हैं |

साथियो, मुझे यह भी बताया गया कि Indian Breed के Dogs भी बहुत अच्छे होते हैं, बहुत सक्षम होते हैं | Indian Breeds में मुधोल हाउंड हैं, हिमाचली हाउंड है, ये बहुत ही अच्छी नस्लें हैं | राजापलायम, कन्नौ, चिप्पीपराई, और कोम्बाई भी बहुत शानदार Indian breeds हैं | इनको पालने में खर्च भी काफी कम आता है, और ये भारतीय माहौल में ढले भी होते हैं | अब हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने भी इन Indian breed के dogs को अपने सुरक्षा दस्ते में शामिल कर रही हैं | पिछले कुछ समय में आर्मी, CISF, NSG ने मुधोल हाउंड dogs को trained करके dog squad में शामिल किया है, CRPF ने कोम्बाई dogs को शामिल किया है | Indian Council of Agriculture Research भी भारतीय नस्ल के Dogs पर research कर रही है | मकसद यही है कि Indian breeds को और बेहतर बनाया



जा सके, और, उपयोगी बनाया जा सके | आप internet पर इनके नाम search करिए, इनके बारे में जानिए, आप इनकी खूबसूरती, इनकी qualities देखकर हैरान हो जाएंगे | अगली बार, जब भी आप, dog पालने की सोचें, आप जरूर इनमें से ही किसी Indian breed के dog को घर लाएँ | आत्मनिर्भर भारत, जब जन-मन का मन्त्र बन ही रहा है, तो कोई भी क्षेत्र इससे पीछे कैसे छूट सकता है |

मेरे प्रिय देशवासियो, कुछ दिनों बाद, पांच सितम्बर को हम शिक्षक दिवस मनायेंगे | हम सब जब अपने जीवन की सफलताओं को अपनी जीवन यात्रा को देखते हैं तो हमें अपने किसी न किसी शिक्षक की याद अवश्य आती है | तेज़ी से बदलते हुए समय और कोरोना के संकट काल में हमारे शिक्षकों के सामने भी समय के साथ बदलाव की एक चुनौती लगती है | मुझे खुशी है कि हमारे शिक्षकों ने इस चुनौती को न केवल स्वीकार किया, बल्कि, उसे अवसर में बदल भी दिया है | पढाई में तकनीक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कैसे हो, नए तरीकों को कैसे अपनाएँ, छात्रों को मदद कैसे करें यह हमारे शिक्षकों ने सहजता से अपनाया है और अपने students को भी सिखाया है | आज, देश में, हर जगह कुछ न कुछ innovation हो रहे हैं | शिक्षक और छात्र मिलकर कुछ नया कर रहे हैं | मुझे भरोसा है जिस तरह देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिये एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है, हमारे शिक्षक इसका भी लाभ छात्रों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभायेंगे |

साथियो, और विशेषकर मेरे शिक्षक साथियो, वर्ष 2022 में हमारा देश स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मनायेगा | स्वतंत्रता के पहले अनेक वर्षों तक हमारे देश में आज़ादी की जंग उसका एक लम्बा इतिहास रहा है | इस दौरान देश का कोई कोना ऐसा नहीं था जहाँ आजादी के मतवालों ने अपने प्राण न्योछावर न किये हों, अपना सर्वस्व त्याग न दिया हो | यह बहुत आवश्यक है कि हमारी आज की पीढ़ी, हमारे विद्यार्थी, आज़ादी की जंग हमारे देश के नायकों से परिचित रहे, उसे उतना ही महसूस करे | अपने जिले से, अपने क्षेत्र में, आज़ादी के आन्दोलन के समय क्या हुआ, कैसे हुआ, कौन शहीद हुआ, कौन कितने समय तक देश के लिए जेल में रहा | यह बातें हमारे विद्यार्थी जानेंगे तो उनके व्यक्तित्व में भी इसका प्रभाव दिखेगा इसके लिये बहुत से काम किये जा सकते हैं, जिसमें हमारे शिक्षकों का बड़ा दायित्व है | जैसे, आप जिस जिले में हैं वहाँ शताब्दियों तक जो आजादी का जंग चला उन

आजादियों के जंग में वहाँ कोई घटनाएं घटी हैं क्या ? इसे लेकर विद्यार्थियों से research करवाई जा सकती है | उसे स्कूल के हस्तलिखित अंक के रूप में तैयार किया जा सकता है आप के शहर में स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ा कोई स्थान हो तो छात्र छात्राओं को वहाँ ले जा सकते हैं | किसी स्कूल के विद्यार्थी ठान सकते हैं कि वो आजादी के 75 वर्ष में अपने क्षेत्र के आज़ादी के 75 नायकों पर कवितायें लिखेंगे, नाट्य कथाएँ लिखेंगे | आप के प्रयास देश के हजारों लाखों **unsung heroes** को सामने लायेंगे जो देश के लिए जिये, जो देश के लिए खप गए जिनके नाम समय के साथ विस्मृत हो गए, ऐसे महान व्यक्तित्वों को अगर हम सामने लायेंगे आजादी के 75 वर्ष में उन्हें याद करेंगे तो उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी और जब 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मना रहे हैं तब मैं मेरे शिक्षक साथियों से जरूर आग्रह करूँगा कि वे इसके लिए एक माहोल बनाएं सब को जोड़ें और सब मिल करके जुट जाएँ |

मेरे प्रिय देशवासियो, देश आज जिस विकास यात्रा पर चल रहा है इसकी सफलता सुखद तभी होगी जब हर एक देशवासी इसमें शामिल हो, इस यात्रा का यात्री हो, इस पथ का पथिक हो, इसलिए, ये जरूरी है कि हर एक देशवासी स्वस्थ रहे सुखी रहे और हम मिलकर के कोरोना को पूरी तरह से हराएं | कोरोना तभी हारेगा जब आप सुरक्षित रहेंगे, जब आप “दो गज की दूरी, मास्क जरूरी”, इस संकल्प का पूरी तरह से पालन करेंगे आप सब स्वस्थ रहिये, सुखी रहिये, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ अगली ‘मन की बात’ में फिर मिलेंगे |

बहुत बहुत धन्यवाद | नमस्कार |

\*\*\*\*\*